ऑडियो विडियो रिकॉर्डिंग एवं कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर नः- 02
ट्रैक नः- 200M0006
ट्रैक समयावधि :- 24-14
कलाकार का नाम :- अरफाज खां
पिता का नाम :- हैदर खां
पता :- गांव बउनवा जागीर तेह पचपदरा
जिला- बाड़मेर
सहायक कलाकार :- फारुक खां, अयूब खां
विडियो रिकॉर्डिंग समय :-

विषय :- कथा (राजाभोज)
विशेष विवरण :-
दिनांक :- 05-07-2021
स्थान :-

यह कथा 'राजाभोज' नाम से प्रचलित है। कथा राजाभोज के जीवन पर आधारित है।

कथा की शुरुआत में नाई और राजाभोज मित्रता होती है तो नाई हमेशा राजभोज के साथ ही रहता है। एक दिन रात के समय में नाई की औरत को कहीं जाते देखता है तो वह उसका पीछा करता है। वह औरत एक पुराने मन्दिर में जाती है जहाँ एक जादूगर महराज बैठा है तथा वह औरत रोज उस महराज से मिलने जाती है। यह बात राजभोज नाई को बताता है और वे दोनों उस मन्दिर में जाते है और उस महराज को मार देते है और मन्दिर के पीछे छुप जाते है तथा थोडी देर में वह औरत आती है तो देखती है कि महराज को किसी ने मार डाला तो उस औरत की आँखे गुस्से से लाल हो जाती है तथा वह कसम खाती है कि अगर मुझे पता चल गया कि महराज किस आदमी मारा तो मैं उस आदमी को मारकर उसके खून के सात चुल्लू खून पीयुंगी। और यह मंदिर के पीछे खडे राजभोज और नाई दोनो सुनते है तथा राजाभोज नाई से कहता है कि यह बात तुम भूल से भी तुम्हारी औरत पता नहीं चलनी चाहिए। इसतरह काई दिन गुजर जाते है लेकिन राजाभोज रोज रात को पहरा देता है कि कहीं नाई अपनी पत्नी को वह बात बता न दे तथा एक दिन नाई अपनी पत्नी से पानी पिलाने को कहता है तो वह कहती है कि बाहर बिल्ली बैठी है मुझे डर लगरहा है तो नाई कह देता है कि जब रात को महराज के पास जाती थी तब तो डर नहीं लगता था तथा वह बोलती है कि तब तो महराज को भी तुमने ही मारा होगा और कहता है हाँ मैंने मारा है। तो वह उसी वक्त अपने पती को मारकर सात चुल्लू खून पी लेती है और यह सब राजाभोज अपनी आँखो से देखता है। सुबह वह औरत कहती है मैं अपने पती के साथ सती होऊँगी। अब वह आग में सती हो रही है आधी जल जाती है तो राजाभोज बोलता है कि देखो लोगो अपने पती

पती को मारकर सती हो रही है। यह सुनकर वह औरत बोलती है कि पहले बोलता तो तुझे भी मार डालती लेकिन अब तो मैं आधी जल चुकी हूं। ये और तुम्हारी सभी रानियों के पास उसी महाराज के चेले बैठे हैं यह कहकर वह तो जल जाती है और राजभोज अपने महल में जाकर देखता है तो उसी महाराज के चेले बैठे हैं। वह राजभोज पर अपने मंत्र फेंककर कुत्ता बना देते हैं तथा राजभोज वह शहर छोड़कर निकल जाता है। पीछे वे महाराज के चेले और रानियाँ उस कुत्ते को मारने का ऑर्डर देते हैं और उस पर ईनाम रखते हैं तो लोग उसके पीछे पड़ जाते हैं। वह भागत-भागत जंगल में चला जाता है कुछ दिन गुजर जाते हैं और वह दूसरे गाँव में जाता है तो वहां उसे उसी के शहर की लड़की देखती है तथा वह उसे पहचान लेती है क्योंकि उसने वह जो आदेश सुना था वह उसी रंग का कुत्ता है तो वह उसे अपने घर ले जाती और पानी पिलाती है और अपने घर में छुपा देती है। थोड़ी देर में उसका लड़का खेलता हुआ वहां आता है और उस कुत्ते को देखता है और उसको पकड़वा ने लिए सैनीकों को बुलाने जाता है लेकिन उसकी माँ उस कुत्ते को वहां भगा देती है और वह वहां से चला जाता है और किसी दूसरे शहर में जाता है और एक राजकुमारी के महल के पास जाकर बैठ जाता है तथा जब राजकुमारी जब वह खिड़की खोलती है तो वह उस कुत्ते को देखते ही पहचान जाती है और वह खिड़की से पिंजरा नीचे उतारती है तो वह उसके अन्दर बैठ जाता है और वह उसे महल के अन्दर खींच लेती है तथा वह अपनी विद्या से वापिस इंसान रूप में ले आती है और वह राजभोज से विवाह कर लेती है तथा कुछ दिनों बाद राजा भोज कंवल देश जाता है और विद्या सीख कर आता है तो वह कोई

भी रूप धारण कर सकता था एक दिन राजा भोज और नाई [redacted] अतः नाई राजभोज के साथ कवकदेश जाता है और बहार ही खड़ा रहता है लेकिन वह सुनकर भी विद्या सीख लेता है तथा वे एक दिन सिकार पर जाते है तो वहां राजभोज हिरणों को उछल कूद करते देखता है वह नाई से कहता है कि मैं थोड़ा इन हिरणों के साथ खेलकर आता हूं तुम मेरे इस मानव खोलिये का ध्यान रखना यह कहकर राजाभोज हिरण के खोलिये में आ जाता है और हिरणों के साथ चला जाता है। पिछे नई अपना खोलिया उतारकर राजभोज का खोलिया पहन-कर चला जाता है जब राजाभोज वापिस आता है तो उसे पता लग जाता है कि नाई ने उसके साथ धोखा किया है तो वह वापिस हिरणों के साथ चला जाता है और नाई राज-भोज बनकर महल में चला जाता है। तथा अब वह राजा है तो वह आदेश देता है कि इस हिरण को मारेगा उसे इनाम दिया जाएगा और सभी लोग हिरणों को मारने लग जाते है। एक शिकारी उसी हिरण को तीर मारता है तथा उसी समय एक बाज तोते को मारता है तो तोता नीचे गिरने से पहले उस हिरण के प्राण निकलकर उस तोते में चले जाते है तथा राजभोज तोता बनकर उड़ जाता है। लेकिन अब नाई को भी पता लग जाता है कि राजाभोज के प्राण उस तोते मे है। कुछ दिन गुजर जाते है तो अब राजभोज की पत्नी को पता लग जाता है कि नाई ने राजभोज के साथ धोखा किया है तो वह रोज सत पर तोतो के दाना चुगाती है और उसकी सत पर 72 तोते दाना चुगने आते है एक दिन उसकी सत पर 73 तोते आ जाते है वह एक नए तोते को देखती है तो हाथ में दाने लेकर कहती है कि अगर तुम राजाभोज हो तो मेरे हाथ पर आ जाओ तथा वह तोता उड़कर हाथ पर बैठ जाता है तो उसे पता चल जाता है कि यह राजा-भोज ही है वह उसे अपने महल में लेकर चलीजाती

है और उस तोते से पूछती है तो वह सारी बात बताता है। एक राजकुमारी उस भाई से कहती है कि तुम अगर राजा भोज हो तो विद्या सीखे हुए हो तो किसी का भी रूप धारण कर सकते हो तथा वह कहता है हाँ मैं कर सकता हूँ क्योंकि वह भी विद्या सीखा हुआ था तो अपना खोलिया छोड़कर जानवर का खोलिया धारण करता है तो राजभोज वापिस अपना खोलिया धारण कर लेता है तथा भाई तो जानवर के खोलिये में ही रहता है और राजाभोज अपना असली खोलिया मिल जाता है तथा राजभोज और उसकी पत्नी वही राजपाट करते हैं।